शहतूत का मूल विगलन रोग

मूल विगलन रोग शहतूत का गंभीर रोग है। यह प्रायः शहतूत उपजाने वाले सभी क्षेत्रों में व्यापक तौर पर पाया जाता है। फ्यूसेरियम ओक्सिस्पोरम, राइजोबटोनिया सोलानि, फ्यूसेरियम बैटिकोला और बोट्रियोडाइप्लोडिया थियोब्रोमे आदि कवकों से मूल विगलन रोग उत्पन्न होता है। इसका प्रकोप वर्ष भर रहता है।

रोग लक्षण और वृद्धि

- पौधों का मुरझाना, सूख जाना और निष्पत्रित होना इस रोग के लक्षण है।
- इसके बाद में जड़ों का सड़ना शुरु होता है और रोग ग्रस्त पौधों की मृत्यु हो जाती है।
- रोग प्रकोप से पत्ती उपज में 14% कमी होती है और मृत्यु दर 30% होती है। 30-35° से तापमान और <40% आद्रता वाली मृदा में रोग तेज फैलता है।

- पहले यह रोग वाटिकाओं के कुछ पौधों में प्रकट होता है जो संक्रमण केन्द्र के रुप में कार्य करके जल्द ही बड़ी संख्या में पौधों को नष्ट करता है।
- रोगाणु जड़ के कोर्टेक्स में प्रवेश करके फैलते है और कॉलनी बनाकर कई काले बीजाणु उत्पन्न करते है। चूँकि जड़ के इर्द गिर्द के कोर्टेक्स सूख जाते है, इसलिए कोर्टेक्स नष्ट होकर जड़ सड जाते है। संक्रमित पौधों को आसानी से निकाल सकते हैं।

अनुप्रयोग विधि

भूतल से 30 से.मी. ऊँचाई तक छंटाई करें।

पौधों की चारों तरफ खोदकर मृदा को हटा दें।

2 लीटर पानी में 10 ग्रा. रॉट फिक्स मिलाएँ

स्टंप को गीला करते हुए 2 मीटर रॉट फिक्स घोल डालें।

इसके ऊपर मिट्टी डालें।

पौधों की चारों तरफ की मृदा को दबाएँ।

लाभ

- मूल विगलन रोग उत्पन्न करने वाले सभी फफूँदी रोगाणुओं के विरुद्ध पारिस्थिति अनुकूल ब्रोड स्पेक्ट्रम सूत्रीकरण है।
- रोग की प्रारंभिक अवस्था ओं में अनुप्रयोग करने पर पौधे पुनरुज्जीवित होते हैं।
- सूत्रीक्रण में 89.5% पारिअनुकूल जैव सामग्री है और 8% जैव रासायनिक है।
- आर्थिक रुप से व्यवहार्य रोग प्रबंधन प्रणाली है।
- हितकारी मृदा सूक्ष्मजीवाणुओं को प्रभावित नहीं करता।
- रेशम कीटपालन पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता।
- सूत्रीकरण का शेल्फ लाइफ दो वर्ष है।

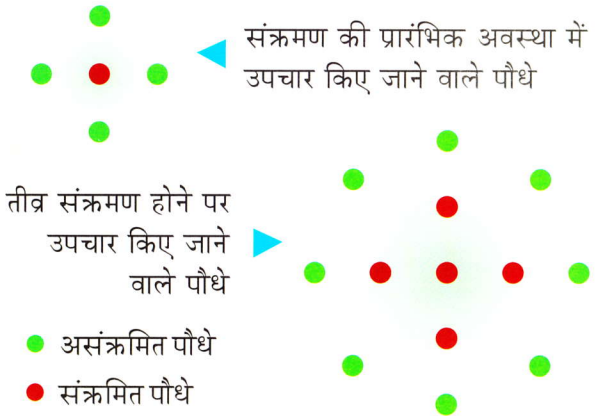

निर्देश

- मृत शहतूत पौधों को निकालकर जला दें और मृदा में धूप पड़ने दें।
- जड़ों को 20 मिनट तक 0.4% रॉट फिक्स में डुबोकर रखने के बाद लगाएँ।
- रोग फैलने से रोकने हेतु चारों तरफ के पौधों का भी उपचार करा लें।
- संक्रमण की प्रारंभिक अवस्थाओं में जब पौधों का किनारा सूखने लगता है और मुरझाते है तब उपचार करा लें।
- अनुप्रयोग के 2–3 दिनों बाद उपचरित शहतूत पौधों पर पानी डालें।
- पौधे पुनरुज्जीवित नहीं होते तो 30 दिनों बाद फिर उपचार करें।
- मृदा के जैव कार्बन घटक को बढ़ाने हेतु पर्याप्त मात्रा में वानस्पतिक खाद / उर्वरक का अनुप्रयोग करें।
- रोग फैलने से रोकने हेतु मृदा आर्द्रता स्तर को 40% बनाए रखें।
- नए शहतूत पौधों को लगाने के पहले खुदाई और जुताई करके सदा मिट्टी में धूप पडने दें।

सावधानियाँ

- सामग्री को वायुरुद्ध पैकों में रखें।
- उत्पाद को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।
- उत्पाद में सीधा धूप न पड़ने दें।

प्रतीश कुमार पी.एम.,राजशेखर के और
वी.शिवप्रसाद

संपर्क करें

निदेशक
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान
(आईएसओ 9001 : 2015 प्रमाणित)
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूरु - 570 008
दूरभाष : 0821–2362845 फैक्स : 0821 2362845
वेबसाइट : www.csrtimys.res.in ईमेल : csrtimys.csb@nic.in

Copies: 1000 Ocotober 2017 Design & Layout: J. Justin Kumar

रॉट फिक्स

शहतूत के मूल विगलन रोग को नियंत्रित करने हेतु पारिअनुकूल ब्रोड स्पेक्ट्रम सूत्रीकरण

रॉट फिक्स
शहतूत के मूल विगलन रोग को नियंत्रित करने हेतु पारिअनुकूल ब्रोड स्पेक्ट्रम सूत्रीकरण

केंरेअप्रसं, मैसूरु का उत्पाद

केन्द्रीय रे ाम उत्पादन अनुसंधान व प्र ाक्षण संस्थान
(आईएसओ ९००१ : २०१५ प्रमाणित)
केन्द्रीय रे ाम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय
भारत सरकार, श्रीरामपुरा, मैसूरु - ५७० ००८